Visit **Dwarkadheeshvastu.com** For
FREE Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos Educational Books, Educational Videos, Wallpapers
****
All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name
****
We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK.**
Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

नवदुर्गा व्रत कथा

श्लोकार्थ सहित

॥ श्रीहरिः ॥

१. शैलपुत्री

वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्॥

माँ दुर्गाके नौ स्वरूपोंमें प्रथम स्वरूप भगवती शैलपुत्रीका है। पर्वतराज हिमवान्की पुत्री होनेके कारण ये शैलपुत्रीके नामसे प्रसिद्ध हुईं। वृषभारूढ़ भगवती शैलपुत्री अपने दाहिने हाथमें त्रिशूल तथा बायें हाथमें सुन्दर कमल-पुष्प धारण करती हैं। इनके सिरपर अर्धचन्द्र और स्वर्ण-मुकुट सुशोभित हैं। अपने पूर्वजन्ममें इन्होंने दक्ष-कन्याके रूपमें अवतार लिया था, उस समय इनका नाम सती था। वहाँ भी इन्होंने अपनी कठिन तपस्यासे भगवान् शिवको प्रसन्न करके उन्हें पतिरूपमें प्राप्त किया था। पिताके यज्ञमें अपने पतिकी उपेक्षा देखकर इन्होंने योगाग्निमें स्वयंको भस्म कर दिया और अपने दूसरे जन्ममें हिमालयकी पुत्रीके रूपमें उत्पन्न हुईं तथा पुनः भगवान् शंकरकी अर्धाङ्गिनी बनीं। मनोवाञ्छित सिद्धिके लिये इनकी उपासना नवरात्रपूजनके प्रथम दिन की जाती है।

२. ब्रह्मचारिणी

दधाना करपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा॥

माँ दुर्गाके दूसरे स्वरूपका नाम ब्रह्मचारिणी है। यहाँ ब्रह्म शब्दका अर्थ तपस्या है। कठोर तपस्या और धैर्यकी तो इनमें पराकाष्ठा है। कठोर तपस्याकी चारिणी होनेके कारण ही इनकी प्रसिद्धि 'ब्रह्मचारिणी' नामसे हुई। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी इनकी कठोर तपस्याको देखकर दंग रह गये। इनका स्वरूप पूर्ण ज्योतिर्मय और अत्यन्त ही भव्य है। इनके दाहिने हाथमें जपमाला, बायें हाथमें कमण्डलु और सिरपर स्वर्णमुकुट सुशोभित है। नवरात्रके दूसरे दिन इन्हींकी उपासनाका विधान है। माँ दुर्गाका यह दूसरा स्वरूप भक्तों और सिद्धोंको अनन्त फल प्रदान करनेवाला है। इनकी उपासनासे मनुष्यमें त्याग, वैराग्य और असीम धैर्यकी वृद्धि होती है। माँ ब्रह्मचारिणीकी कृपा सर्वत्र सिद्धि और विजय प्रदान करनेवाली है।

३. चन्द्रघण्टा

पिण्डजप्रवरारूढा चण्डकोपास्त्रकैर्युता।
प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥

माँ दुर्गाका तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टाके नामसे प्रसिद्ध है। इनके मस्तकपर घण्टाकार चन्द्र सुशोभित होनेके कारण इन्हें चन्द्रघण्टा कहा जाता है। इनके दस हाथ हैं। इनके दाहिने ओरके चार हाथोंमें अभय मुद्रा, धनुष, बाण तथा कमल सुशोभित हैं और पाँचवाँ हाथ वक्षस्थित मालापर है। इनके बायें ओरके हाथोंमें कमण्डलु, वायुमुद्रा, खड्ग, गदा और त्रिशूल हैं। इनके कण्ठमें पुष्पहार, कानोंमें स्वर्णाभूषण तथा सिरपर स्वर्णमुकुट है। इनका वाहन सिंह है। इनकी आराधना नवरात्रके तीसरे दिन की जाती है। ये दुष्टोंका दमन एवं विनाश करनेके लिये सदैव तत्पर रहती हैं। अतः इनके आराधक सिंहकी तरह पराक्रमी और सर्वत्र निर्भय हो जाते हैं। माँ चन्द्रघण्टा अपने उपासकको भुक्ति और मुक्ति—दोनों प्रदान करती हैं।

४. कूष्माण्डा

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे॥

माँ दुर्गाके चौथे स्वरूपको कूष्माण्डा कहते हैं। अपने मन्दस्मित हाससे अण्ड और ब्रह्माण्डको उत्पन्न करनेके कारण ही ये 'कूष्माण्डा' नामसे कीर्तित हुई। अपने 'ईषत्' हास्यसे ब्रह्माण्डका निर्माण करनेके कारण ये सृष्टिकी आदिशक्ति हैं। इनके शरीरकी कान्ति सूर्यके समान देदीप्यमान है। इनकी आठ भुजाएँ हैं, अतः इन्हें अष्टभुजा देवी भी कहते हैं। इनके दाहिने ओरके हाथोंमें कमण्डलु, धनुष, बाण तथा कमल सुशोभित हैं और बायें ओरके हाथोंमें अमृत-कलश, जपमाला, गदा तथा चक्र हैं। इनके सिरपर स्वर्णमुकुट और कानोंमें स्वर्णाभूषण हैं। ये सिंहके ऊपर आरूढ हैं। इनकी उपासना नवरात्रके चौथे दिन की जाती है। माँ कूष्माण्डाकी उपासनासे भक्तोंके समस्त रोग-शोक विनष्ट हो जाते हैं तथा आयु, यश, बल और आरोग्यकी वृद्धि होती है।

५. स्कन्दमाता

सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी॥

माँ दुर्गाके पाँचवें स्वरूपको स्कन्दमाता कहा जाता है। स्कन्दका एक नाम कुमार कार्त्तिकेय भी है। इन्होंने देवशत्रु तारकासुरका वध किया था। कुमार कार्त्तिकेयकी माता होनेके कारण दुर्गाजीका यह पाँचवाँ स्वरूप स्कन्दमाताके नामसे विख्यात है। भगवती स्कन्दमाताकी चार भुजाएँ हैं। ये अपनी दाहिनी ओरकी एक भुजासे कुमार कार्त्तिकेयको पकड़कर गोदमें बैठायी हैं और दूसरी भुजामें कमल-पुष्प धारण की हैं। इनकी बायीं ओरकी एक भुजामें वरमुद्रा तथा दूसरीमें कमल सुशोभित है। इनके सिरपर सुन्दर स्वर्णमुकुट तथा कानोंमें स्वर्णाभूषण हैं। इनका वाहन सिंह है। नवरात्रके पाँचवें दिन इनकी उपासनाका विधान है। माँ स्कन्दमाताकी उपासनासे भक्तकी समस्त इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं और उसके लिये मोक्षका द्वार खुल जाता है।

६. कात्यायनी

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्यादेवी दानवघातिनी॥

माँ दुर्गाके छठें स्वरूपको कात्यायनी कहते हैं। महर्षि कात्यायनके यहाँ पुत्रीरूपमें उत्पन्न होनेके कारण इनका 'कात्यायनी' नाम प्रसिद्ध हुआ। ऐसी भी कथा मिलती है कि इन्होंने आश्विन कृष्णा चतुर्दशीको महर्षि कात्यायनके यहाँ जन्म लेकर आश्विन शुक्ल सप्तमी, अष्टमी और नवमीको उनके द्वारा पूजा ग्रहण की थी। तदनन्तर आश्विन शुक्ल दशमीको कात्यायनी देवीने महिषासुरका वध किया। यही व्रजमण्डलकी अधिष्ठात्री देवीके रूपमें प्रतिष्ठित हैं। इनका स्वरूप अत्यन्त भव्य है। इनकी चार भुजाएँ हैं तथा इनका वाहन सिंह है। इनकी दाहिनी ओरकी दो भुजाओंमें अभय तथा वरमुद्रा और बायीं ओरकी दो भुजाओंमें खड्ग और कमल हैं। इनके सिरपर सुन्दर स्वर्णमुकुट सुशोभित है। इनकी उपासना नवरात्रके छठवें दिन की जाती है। इनकी उपासनासे साधकको अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष—सभी सहज ही सुलभ हो जाते हैं।

B.K. Mitra

७. कालरात्रि

एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी॥
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टकभूषणा।
वर्धन्मूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी॥

माँ दुर्गाका सातवाँ स्वरूप कालरात्रिके नामसे प्रसिद्ध है। इनके शरीरका रंग अन्धकारकी तरह काला, सिरके बाल बिखरे हुए तथा गलेमें विद्युत्की तरह चमकीली माला है। इनके तीन नेत्र हैं। इनकी नासिकाके श्वास-प्रश्वाससे अग्निकी भयङ्कर ज्वालाएँ निकलती हैं। इनका वाहन गर्दभ (गदहा) है। इनकी दायीं ओरकी दो भुजाओंमें अभय और वरमुद्रा तथा बायीं ओरकी दो भुजाओंमें लोहेका काँटा एवं तलवार सुशोभित हैं। नवरात्रके सातवें दिन इनकी उपासनाका विधान है। माँ कालरात्रि स्वरूपसे भयानक होनेके बाद भी सदैव शुभ फलोंकी प्रदात्री हैं। इसलिये इनका एक नाम 'शुभङ्करी' भी है।

८. महागौरी

श्वेते वृषे समारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा॥

माँ दुर्गाके आठवें स्वरूपका नाम महागौरी है। इनके शरीरका वर्ण पूर्णतः गौर तथा वस्त्राभूषण आदि भी श्वेत हैं। इनकी आयु आठ वर्षकी मानी गयी है। इनकी चार भुजाएँ हैं तथा इनका वाहन वृषभ है। इनकी दायीं ओरकी दो भुजाओंमें वरमुद्रा तथा त्रिशूल और बायीं ओरकी दो भुजाओंमें डमरू तथा अभय मुद्रा सुशोभित है। नवरात्रके आठवें दिन इनकी उपासनाका विधान है। इनकी उपासना अमोघ तथा सद्यःफलदायी है। इनकी उपासनासे भक्तोंका सर्वविध कल्याण होता है और उनके पूर्वसंचित समस्त पापोंका विनाश हो जाता है। इनकी कृपासे अलौकिक सिद्धियोंकी प्राप्ति होती है। जो मनुष्य सदैव माँ गौरीकी अनन्य भावसे भक्ति करते हैं, उनके सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। पुराणोंमें इनकी अनन्त महिमाका वर्णन मिलता है।

९. सिद्धिदात्री

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि ।
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी ॥

माँ दुर्गा अपने नवें स्वरूपमें सिद्धिदात्रीके नामसे प्रसिद्ध हैं। माँ सिद्धिदात्री अपने आराधकको आठों सिद्धियाँ प्रदान करनेमें समर्थ हैं। देवीपुराणके अनुसार भगवान् शिवने भी इन्हींकी कृपासे सिद्धियोंको प्राप्त किया था। माँ सिद्धिदात्री चार भुजाओंवाली हैं। इनकी दायीं ओरकी दो भुजाओंमें गदा और चक्र तथा बायीं ओरकी दो भुजाओंमें पद्म और शंख सुशोभित हैं। ये अपने सिरपर स्वर्णमुकुट तथा गलेमें श्वेत पुष्पोंकी माला धारण करती हैं। कमलपर आसीन भगवती सिद्धिदात्रीकी सिद्ध, गन्धर्व, यक्ष, देवता और असुर सभी आराधना करते हैं। नवरात्रके नवें दिन इनकी आराधना की जाती है। इनकी उपासना करनेवाले साधकके लिये संसारमें कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता अर्थात् उसके अन्दर सब कुछ करनेकी सहज शक्ति प्राप्त हो जाती है।